जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया (ऊ प्र०)

चयन आधारित क्रेडिट पद्धति (सी.बी.सी.एस.) के अनुसार

संस्कृत साहित्य – पाठ्यक्रम

एम० ए० (संस्कृत) – द्विवर्षीय

पाठ्यक्रम विवरणिका

शैक्षणिक सत्र : 2022 – 2023 से प्रभावी

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

परास्नातक

पाठ्यक्रम (2022-2023)

संस्कृत

उत्तर प्रदेश के पूर्वी छोर पर अवस्थित जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, ऋषि- मुनि-सन्त महात्माओं की तपोभूमि बलिया जनपद का गौरव है। इसकी स्थापना उत्तर प्रदेश राज्य वि0 वि0 अधिनियम : 1973 के तहत 2016 ई. में हुई। यह जनपद मुख्यालय से 12 किमी. उत्तर बसन्तपुर में अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच स्थित है। विश्वविद्यालय के सहयुक्त सम्बद्ध महाविद्यालयों की संख्या 125 है, जिसमें एक राजकीय तथा दस अशासकीय महाविद्यालय अपनी महती भूमिका निभा रहें है।

विश्वविद्यालयीय गतिविधियों सुचारू रूप से संचालन के लिए रा0 शि0 नी0 2022 के तहत विभिन्न प्रकोष्ठें का गठन किया गया है। इनमें अकादमिक एकीकरण एवं कौशल, अनुसंधान एवं विकास, भारतीय भाषा, संस्कृत एवं कला, दिव्यांग तथा वंचित समूह सहायता इत्यादि प्रमुख हैं। इसके साथ ही शोध- पीठ के माध्यम से राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न साहित्यक- सांस्कृतिक कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं।

संस्कृत साहित्य-पाठ्यक्रम

लक्ष्य एवं उद्देश्य :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः वह समाज की समस्त गतिविधियों से प्रभावित होता है। जब वह अपने हृदय की तरंगित ललित भावनाओं एवं अनुभूतियों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है, तो साहित्य का सृजन होता है। यह साहित्य ही मनुष्य को पशुओं से भिन्न बनाता है। महाकवि भर्तृहरि ने भी कहा है -

''साहित्यसंगीतकलाविहीनः, साक्षात्पशुपुच्छविषाणहीनः''।

वस्तुतः मानव समाज तथा साहित्य में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होता है। क्योंकि मनुष्य के आन्तरिक सूक्ष्म एवं मृदुभावनाओं का यथारूप अंकन एवं सम्यक् प्रकटीकरण साहित्य के माध्यम से ही सम्भव होता है।

विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं में और उनके साहित्य में संस्कृत का अपना विशिष्ट महत्व है। यह महत्व अनेक दृष्टियों से है। सहस्राब्दियों से इस भाषा और इसके वाङ्मय को भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त रही है। भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन एवं विकास के सोपनों की सम्पूर्ण व्याख्या, संस्कृत वाङ्मय के माध्यम से विद्यार्थी प्राप्त कर सकते हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का स्थायी प्रभाव साहित्य के विद्यार्थियों पर पड़ना स्वाभाविक है। स्नातकोत्तर स्तर पर संचालित इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी अध्ययन के उपरान्त नयी दृष्टि एवं नयी सोच के आधार पर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में समर्थ होंगे। संस्कृत साहित्य की समस्त विधाओं के शोधपरक विस्तृत अध्ययन से विद्यार्थियों में निम्नालिखित मूल्यों का सृजन द्रष्टव्य है, यथा-

1. साहित्य शिक्षण विद्यार्थियों के जीवन में सरसता के समावेशन एवं मानवीय गुणों के सम्यग्रूपेण आधान एवं संवर्धन में सहायक सिद्ध होगा।
2. सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में भाषा, पद्य, गद्य, साहित्य-सिद्धान्त, आलोचना के साथ ही प्राचीन भारतीय दार्शनिक मीमांसा का अध्ययन-अनुशीलन निर्दिष्ट है।
3. साहित्य शिक्षण एवं अध्ययन में पद्य शिक्षण के अन्तर्गत रागात्मक भावों की तुष्टि, सौन्दर्यानुभूति का विकास तथा चिन्तवृत्तियों के परिष्कार आदि में पद्य की भूमिका के साथ ही सौन्दर्य- तत्वों को समाहित किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में काव्यात्मक अभिरुचि को सहजतापूर्वक विस्तृत किया जा सके।
4. गद्य साहित्य की व्यापकता के अनुरूप पाठ्यक्रम संस्तुति एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के अनुरूप निर्मित करने का प्रयास किया गया है, जिससे विद्यार्थी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सहित अन्य रोजगारपरक लक्ष्यों को सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकें।
5. आधुनिक शिक्षण- विधि अन्तर्विषयी अध्ययन की महत्ता सुस्थापित है। अतः पाठ्यक्रम में संस्कृत वाङ्मय में अन्तर्निहित मौलिक चिन्तन से प्रगाढ़ता-सम्बद्ध अन्य विषयों विशेषतः इतिहास , विधि तथा दर्शन आदि को भी यथास्थान समाहित करने का प्रयास किया गया है। इसी आधार पर पाठ्यक्रम की रूपरेखा निम्नवत् है -

- यह पाठ्यक्रम दो वर्ष एवं चार सेमेस्टर में विभाजित है।
- प्रत्येक सेमेस्टर में पाँच प्रश्नपत्र निर्धारित किये गये हैं।
- प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक 100 है।
- पाँचवाँ प्रश्नपत्र अधिन्यास/ परियोजना/ उपस्थिति/ समग्र प्रदर्शन से सम्बन्धित होगा।
- पाठ्यक्रम की प्रवेश-प्रक्रिया तथा सीट- निर्धारण विश्वविद्यालय की परिनियमावली के अनुसार होगी।
- यह पाठ्यक्रम संस्कृत साहित्य के इतिहास के साथ-साथ इसके मूल पाठ को बढ़ावा देने वाला है।
- संस्कृत साहित्य के इस पाठ्यक्रम को नवाचार एवं प्रासंगिक सांस्कृतिक अवयवों के आधार पर विकसित किया गया है जिसकी प्रकृति अन्तर्विषयी है।

पाठ्यक्रम की संरचना

भाग	वर्ष	सेमेस्टर	
भाग - 1	प्रथम वर्ष	सेमेस्टर प्रथम	सेमेस्टर द्वितीय
भाग - 2	द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर तृतीय	सेमेस्टर चतुर्थ

सेमेस्टर - प्रथम

सेमेस्टर	प्रश्नपत्र का नाम	प्रश्नपत्र कोड	अधिकतम अंक	क्रेडिट
1.	1. वैदिक वाङ्मय	MSK 101	100	05
	2. दर्शन : सांख्य एवं न्याय-वैशेषिक	MSK 102	100	05
	3. व्याकरण एवंभाषा विज्ञान	MSK 103	100	05
	4. गीतिकाव्य एवं नाटिका	MSK 104	100	05
	5. परियोजना	MSK 105	मूल्यांकन द्वितीय सेमेस्टर के अन्त में	04
			400	24
	एक माइनर/वैकल्पिक प्रश्न-पत्र जो किसी अन्य संकाय के विषय का होगा।		100	04
योग			500	28
		सेमेस्टर - द्वितीय		
2.	1. वैदिक वाङ्मय	MSK 201	100	05
	2. दर्शन : सांख्य एवं न्याय-वैशेषिक	MSK 202	100	05
	3. व्याकरण एवंभाषाविज्ञान	MSK 203	100	05
	4. काव्य एवं नाट्यशास्त्र	MSK 204	100	05
	5. परियोजना	MSK 205	100 (प्रथम + द्वितीय)	04
योग			500	24

सेमेस्टर – तृतीय

3.	1. काव्यशास्त्र	MSK 301	100	05
	2. दर्शन : मीमांसा एवं वेदान्त	MSK 302	100	05
	3. महाकाव्य एवं व्याकरण	MSK 303	100	05
	4. नाट्यविद्या एवं रूपक	MSK 304	100	05
	5. परियोजना	MSK 305	मूल्यांकन चतुर्थ सेमेस्टर के अन्त में	04
योग			400	24
		सेमेस्टर – चतुर्थ		
4.	1. काव्यशास्त्र	MSK 401	100	05
	2. दर्शन : मीमांसा एवं वेदान्त दर्शन	MSK 402	100	05
	3. महाकाव्य एवं व्याकरण	MSK 403	100	05
	4. गद्यकाव्य एवं चम्पूकाव्य	MSK 404	100	05
	5. परियोजना/ साक्षात्कार	MSK 405	100 (तृतीय + चतुर्थ)	04
योग			500	24

1. प्रत्येक विद्यार्थी को प्रथम अथवा द्वितीय सेमेस्टर में एक माइनर/वैकल्पिक प्रश्न पत्र पढ़ना होगा। यह प्रश्न-पत्र किसी अन्य संकाय के विषय से होगा।
2. सम्पूर्ण क्रेडिट = 28 + 24 + 24 + 24 = 100
3. सम्पूर्ण अंक = 500 + 500 + 400 + 500 = 1900
4. प्रोजेक्ट कार्य सतत मूल्यांकन पर आधारित होगा। प्रथम सेमेस्टर के प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन द्वितीय सेमेस्टर के प्रोजेक्ट कार्य के साथ होगा। इसी प्रकार तृतीय सेमेस्टर के प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन चतुर्थ सेमेस्टर के साथ होगा।

परास्नातक (संस्कृत)
प्रथम सेमेस्टर (प्रथम प्रश्नपत्र)

पाठ्यक्रम कोड MSK 101 अधिकतम अंक 100

वैदिक वाङ्मय

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य –

निर्धारित पाठ्यक्रमके अध्ययन का मूल उद्देश्य है –

- वैदिक वाङ्मय के सन्दर्भ में छात्रों को व्यापक अन्तर्दृष्टि प्रदान करना।
- वैदिक संहिता से चयनित कतिपय महत्वपूर्ण सूक्तों में वर्णित वैदिक देवताओं तथा वैदिक चिन्तन (विशेषतः ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एवं राष्ट्रनिर्माण के सन्दर्भ में) का गहन अध्ययन कराना।
- वैदिक व्याकरण के ज्ञान से वैदिक भाषा के अनुपम स्वरूप में अवगत कराना।
- पाणिनीय शिक्षा – रूपी साधन के माध्यम से मन्त्रों के सम्यक्/विशुद्ध उच्चारण विधि से अवगत कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	ऋग्वेद – वरूण (1.25), इन्द्र (2.12) उषस् (3.61), पर्जन्य (5.83) सूक्त।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा सस्वर वाचन
2	यजुर्वेद – शिवसंकल्प सूक्त अध्याय – 34, मन्त्र 1 -6 अथर्ववेद – राष्ट्राभिवर्द्धनम् सूक्त (1.29)।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा
3	संवाद सूक्त – विश्वामित्र नदी, यम-यमी, पुरूरवा-उर्वशी तथा सरमा-पणि संवाद सूक्तों का सामान्य परिचय।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा
4	पाणिनीय शिक्षा		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा

पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल –

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र –

- वेदों में वर्णित देवतापरक सूक्तों के भावावबोध में सक्षम होंगे।
- वैदिक मन्त्रों में प्रतिपादित भौतिक एवं आध्यात्मिक भावों तथा सामाजिक संदेशों के अवबोध में सक्षम होंगे।
- वैदिक देवताओं की प्रकृति, कर्म तथा उनके प्रतिनिध्यात्मक स्वरूप से अवगत हो सकेंगे।
- वैदिक सूक्तों के प्रसिद्ध प्राचीन एवं अर्वाचीन व्याख्याकारों की व्याख्यापद्धति से सुपरिचित होंगे।
- वैदिक स्वर एवं व्याकरण के ज्ञान से वैदिक मन्त्रों को उनके विशुद्ध स्वरूप में गायन में सक्षम होंगे।

अध्ययन सामग्री –

प्रारम्भिक ग्रन्थ –

1. नवीन वैदिक सञ्चयनम् (द्वितीय भाग) (व्या0) डॉ0 जमुना पाठक, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2016
2. वैदिक सूक्त संग्रह – (व्या0) राधेश्याम खेमका, गीताप्रेस गोरखपुर, 2015
3. पाणिनीय शिक्षा – (व्या0) शिवराज आचार्य, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 2012

द्वितीयक ग्रन्थ –

1. उपाध्याय, बलदेव, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, शारदा संस्थान, वाराणसी, 2006
2. पाण्डेय, उमेशचन्द्र, वैदिक व्याकरण, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2003

अधिन्यास कार्य –

1. इन्द्रसूक्त, वरूणसूक्त तथा शिवसंकल्प सूक्त का सारांश लिखिए।

अथवा

पाणनीय शिक्षा के आधार पर उच्चारण अशुद्धियों एवं उन्हें दूर करने के उपायों का वर्णन कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)

प्रथम सेमेस्टर (द्वितीय प्रश्नपत्र)

पाठ्यक्रम कोड MSK 102 अधिकतम अंक 100

दर्शन : सांख्य एवं न्याय – वैशेषिक

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य –

निर्धारित पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि छात्रों को –

- छात्रों को निर्दिष्ट ग्रन्थों यथा 'सांख्यकारिका' एवं 'तर्कभाषा' के अध्ययन के माध्यम से क्रमशः सांख्य एवं न्याय वैशेषिक दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों, संकल्पनाओं व मान्यताओं से अवगत कराना।
- छात्रों को भारतीय दर्शन के अनेक बहुमूल्य सिद्धांतो एवं अवधारणाओं के तार्किक विश्लेषण की क्षमता से सम्पन्न करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	सांख्यकारिका – कारिका – 1 से 18 तक।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा
2	सांख्यकारिका – कारिका – 19 से 36 तक।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा
3	तर्कभाषा – प्रत्यक्ष प्रमाणपर्यन्त।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा /सस्वर वाचन
4	तर्कभाषा – अनुमान प्रमाणपर्यन्त।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा /सस्वर वाचन

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल –

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- सांख्य एवं न्याय-वैशेषिक दर्शन के मूलभूत संप्रत्ययों एवं संकल्पनाओं के आलोचनात्मक विश्लेषण में समर्थ हो सकेंगे।
- उक्त दार्शनिक तंत्रो में स्वीकृत व अङ्गीकृत पारिभाषिक पदों के भावावबोध में सक्षम होंगे।
- उक्त दार्शनिक तंत्रों में वर्णित जगत् तथा जागतिक अनुभूतियों की व्याख्या सम्बन्धी वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- परमतत्व के निर्धारण अथवा निःश्रेयस की लब्धि में प्रमाणमीमांसीय अध्ययन की महत्ता से अवगत हो सकेंगे।

अध्ययन सामग्री –

प्रारम्भिक ग्रन्थ –

1. तर्कभाषा – केशव मिश्र, (व्या0) आचार्य विश्वेश्वर, चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, 2016
2. तर्कभाषा – केशव मिश्र, (व्या0) बदरीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, 2010
3. सांख्यकारिका – ईश्वर कृष्ण, (व्या0) राकेश शास्त्री, संस्कृत ग्रंथागार, दिल्ली, 2017
4. सांख्यकारिका – ईश्वर कृष्ण, (व्या0) रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2015

अधिन्यास कार्य –

1. सांख्यकारिका के आधार पर सत्यकार्यवाद पर प्रकाश डालिए।

अथवा

तर्कभाषा के आधार पर षड्सन्निकर्ष को स्पष्ट कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)
प्रथम सेमेस्टर (तृतीय प्रश्नपत्र)

पाठ्यक्रम कोड MSK 103   अधिकतम अंक 100

व्याकरण एवं भाषा विज्ञान

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

निर्धारित पाठ्यक्रम का उद्देश्य है -

- छात्रों को भाषा विज्ञान एवं आधुनिक भाषा शास्त्र की प्रमुख अवधारणों से अवगत कराना।
- भाषा की परिभाषा विविध स्वरूप एवं प्रमुख विशेषताओं के सम्बन्ध ज्ञान प्रदान करना।
- ध्वनियों के वर्गीकरण एवं ध्वनि सम्बन्धि नियमों का ज्ञान कराना।
- सिद्धान्त कौमुदी ग्रन्थ के अनुसार कारक एवं विभक्ति विषयक सूत्रों का उदाहरण सहित विशेष अध्ययन कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	सिद्धान्त कौमुदी - (कारक प्रकरणम्) - प्रथमा से चतुर्थी विभक्ति तक।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	सिद्धान्त कौमुदी - (कारक प्रकरणम्) - पंचमी से सप्तमी विभक्ति तक।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	भाषा विज्ञान- भाषा की परिभाषा, बोली, विभाषा एवं भाषा में अन्तर, भाषा और वाक् में अन्तर, भाषा की उत्पत्ति (विविध मत) ।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	भाषा विज्ञान - स्पर्श, स्पर्श संघर्षी वर्ण, अर्धस्वर, ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं,ग्रिम, ग्रासमान एवं वर्नर के ध्वनि नियम।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- कारक के सामान्य नियमोल्लेख पूर्वक सूत्रों के सोदाहरण अध्ययन से संस्कृत भाषा सम्बन्धी निज ज्ञान को पुष्ट करने में समर्थ होंगे।
- आधुनिक भाषाशास्त्रीय सिद्धांतो के आलोक में संस्कृत भाषा के अवलोकन एवं विश्लेषण में निपुण होंगे।
- भाषा के उत्पत्ति विषयक प्रमुख मतो के ज्ञान में सम्पन्न होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक स्रोत -

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी - भट्टोजिदीक्षित(व्या0) पं0 ज्योतिस्वरूप मिश्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1996
2. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 2019
3. द्विवेदी पं0 कपिलदेव, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2016

अधिन्यास कार्य -

1. ध्वनि सम्बन्धी ग्रिम ग्रासमान एवं वर्नर नियमों का विवेचन कीजिए।

अथवा

भाषा की परिभाषा देते हुए भाषा एवं बोली में अन्तर स्पष्ट करें।

परास्नातक (संस्कृत)

प्रथम सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्नपत्र)

पाठ्यक्रम कोड MSK 104 अधिकतम अंक 100

गीतिकाव्य एवं नाटिका

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन का मूल उद्देश्य है -

- कवि श्रीहर्षदेवकृत 'रत्नावली' नाटिका के अध्ययन के माध्यम से रूपक एवं नाटिका के भेद का ज्ञान प्रदान करना।
- नाट्यशास्त्रियों द्वारा नाटिका-कृतिकी संरचना एवं अन्य पक्षों के संदर्भ में विहित नियमों की कसौटी पर 'रत्नावली' नाटिका के मूल्यांकन के निमित्त प्रेरणा प्रदान करना।
- संस्कृत काव्यजगत् के सर्वोत्कृष्ट कवि कालिदासकृत 'मेघदूत' में अवगाहन कराकर उनकी अनुपम भाषा शैली एवं अपूर्व काव्यसौन्दर्य का रसास्वादन कराना।
- महाकवि कालिदास के कृत 'मेघदूत' के अध्ययन एवं अनुशीलन के माध्यम से गीतिकाव्य के स्वरूप एवं विशेषताओं से अवगत कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	मेघदूतम् (पूर्व मेघ) - पद्य 1 से 30 तक		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	मेघदूतम् (पूर्व मेघ) - पद्य 31 से समाप्ति पर्यन्त।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	रत्नावली नाटिका - प्रथम एवं द्वितीय अंक		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	रत्नावली नाटिका - तृतीय एवं चतुर्थ अंक		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

1. 'रत्नावली' नाटिका के अध्ययन के माध्यम से धीरललित नायक तथा स्वकीया-परकीया नायिका की विशेषताओं से अवगत होंगे।

- गीतिकाव्यों में सन्निहित गेयात्मकता से सम्यग्रूपेण अवगत होंगे।
- 'मेघदूत' में चित्रित बाह्य प्रकृति में मानवीय संवेदना की संक्रान्ति से जन्य लोकोत्तर आनन्द की अनुभूति में सफल होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक स्रोत -

1. मेघदूतम्, कालिदास, (व्या0) डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015
2. मेघदूतम्, कालिदास, (व्या0) आचार्य शेषराज रेग्मी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016
3. रत्नावली (नाटिका) -श्री हर्षदेव (व्या0) - डॉ0 श्री कृष्ण त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, 2008
4. रत्नावली (नाटिका) -श्री हर्षदेव (व्या0) - डॉ0 श्री कृष्ण त्रिपाठी, पं0 परमेश्वर दीन पाण्डेय चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2003

अधिन्यास कार्य -

1. रत्नावली नाटिका का एक नाटिका के रूप में मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

मेघदूत में वर्णित मेघ के मार्ग का वर्णन कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)

प्रथम सेमेस्टर, पञ्चम प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 105 **अधिकतम अंक 100**

- अधिन्यास कार्य।
- परियोजना कार्य।
- उपस्थिति।
- समग्र प्रदर्शन।

परास्नातक (संस्कृत)
द्वितीय सेमेस्टर, प्रथम प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 201 अधिकतम अंक 100

वैदिक वाङ्मय

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य –

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन का मूल उद्देश्य है –

- विविध वैदिक सूक्तो एवं उनके प्रतिपाद्य विषय से परिचित कराना।
- उपनिषदों में प्रतिपादित मूल दार्शनिक सिद्धान्तों अथवा सम्प्रत्ययों से अवगत कराना।
- यास्ककृत निरुक्त के अध्ययन के माध्यम से वैदिक पदों की प्रकृति, स्वरूप तथा निर्वचन सम्बन्धी सिद्धान्तों एवं प्रक्रिया का विशेष ज्ञान अर्जित कराना।
- उपसर्गों के विविध अर्थो एवं विविध शब्दों की व्युत्पत्ति का ज्ञान कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	ऋग्वेद – अक्षसूक्त (10.34), ज्ञानसूक्त (10.71), नासदीय सूक्त (10.129)।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा
2	यजुर्वेद – प्रजापति सूक्त – अध्याय 23, मन्त्र 1 से 5 तक अथर्ववेद – कालसूक्त (10.53), पृथिवी सूक्त (12.1) प्रथम द्वादश मन्त्र।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा
3	प्रमुख दश उपनिषदों का सामान्य परिचय।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा
4	निरुक्त – (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय) – पदों का चतुर्विध विभाजन, नामाख्यात स्वरूप, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ, निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन, निर्वचन के सिद्धान्त एवं आचार्य आदि शब्दों की व्युत्पत्ति।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल –

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- वैदिक वाङ्मय के बहुआयामी स्वरूप के संदर्भ में जागृत होंगे।
- वैदिक संहिता के सम्यक् अध्ययन के निमित्त अपेक्षित साधनों से सम्पन्न हो सकेंगे।
- प्रमुख उपनिषदों के दार्शनिक संदेशो को हृदयंगम कर जगत् के प्रति विशेष अर्न्तदृष्टि से युक्त होंगे।
- वैदिक पदों के विविध स्वरूप एवं वैज्ञानिक निर्वचन पद्धति के अवबोध में सक्षम होंगे।

अध्ययन सामग्री –

प्रारम्भिक ग्रन्थ –

1. नवीन वैदिकसंचयनम् (द्वितीय भाग) (व्या0) डॉ0 जमुना पाठक चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी 2016
2. ईशादि नौ उपनिषद, गीता प्रेस गोरखपुर 2017
3. निरुक्त – यास्क (सम्पा0) प्रो0 उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2001

द्वितीयक ग्रन्थ –

1. उपाध्याय, बलदेव – वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, शारदा संस्थान वाराणसी, 2006

अधिन्यास कार्य –

1. पाठ्यक्रम के किन्हीं दो उपनिषदों की विषय वस्तु पर प्रकाश डालिए।

अथवा

षड्भाव विकारों एवं शब्द की नित्यता एवं अनित्यता पर प्रकाश डालिए।

परास्नातक (संस्कृत)
द्वितीय सेमेस्टर, द्वितीय प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 202 अधिकतम अंक 100

दर्शन : सांख्य एवं न्याय – वैशेषिक

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य –

निर्धारित पाठ्यक्रम का उद्देश्य है कि छात्रों को –

- छात्रों को निर्दिष्ट ग्रन्थों यथा 'सांख्यकारिका' एवं 'तर्कभाषा' के अध्ययन के माध्यम से क्रमशः सांख्य एवं न्याय वैशेषिक दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों, संकल्पनाओं व मान्यताओं से अवगत कराना।
- छात्रों को भारतीय दर्शन के अनेक बहुमूल्य सिद्धांतो एवं अवधारणाओं के तार्किक विश्लेषण की क्षमता से सम्पन्न करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	सांख्यकारिका – कारिका – 37 से 54 तक।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	सांख्यकारिका – कारिका – 55 से समाप्ति पर्यन्त।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	तर्कभाषा – उपमान प्रमाण से प्रामाण्यवाद तक।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा /सस्वर वाचन
4	तर्कभाषा – प्रमेय निरूपण से अन्त तक।		व्याख्यान/श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा /सस्वर वाचन

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल –

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र–

- सांख्य एवं न्याय- वैशेषिक दर्शन के मूलभूत संप्रत्ययों एवं संकल्पनाओं के आलोचनात्मक विश्लेषण में समर्थ हो सकेंगे।
- उक्त दार्शनिक तंत्रो में स्वीकृत व अङ्गीकृत पारिभाषिक पदों के भावावबोध में सक्षम होंगे।
- उक्त दार्शनिक तंत्रों में वर्णित जगत् तथा जागतिक अनुभूतियों की व्याख्या सम्बन्धी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सुपरिचित हो सकेंगे।
- परमतत्व के निर्धारण अथवा निःश्रेयस की लब्धि में प्रमाणमीमांसीय अध्ययन की महत्ता से अवगत हो सकेंगे।

अध्ययन सामग्री –

प्रारम्भिक ग्रन्थ –

1. सांख्यकारिका – ईश्वर कृष्ण, (व्या0) राकेश शास्त्री, संस्कृत ग्रंथागार, दिल्ली, 2017
2. सांख्यकारिका – ईश्वर कृष्ण, (व्या0) रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2015
3. तर्कभाषा – केशव मिश्र, (व्या0) आचार्य विश्वेश्वर, चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, 2016
4. तर्कभाषा – केशव मिश्र, (व्या0) बदरीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, 2010

अधिन्यास कार्य –

1. सांख्य कारिका के 37 से 54 कारिका तक वर्णित विषय वस्तु को संक्षेप में लिखिए।

अथवा

तर्कभाषा के आधार पर उपमान प्रमाण एवं प्रमेय निरूपण को स्पष्ट कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)

द्वितीय सेमेस्टर, तृतीय प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 203 — अधिकतम अंक 100

व्याकरण एवं भाषा विज्ञान

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

1. भाषा के वर्गीकरण का ज्ञान कराना एवं वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में तुलना करने में समर्थ बनाना।
2. अर्थ परिवर्तन की दिशाओं एवं उनके कारणों का ज्ञान कराना।
3. महाभाष्य के माध्यम से भाषा के दार्शनिक सम्प्रत्ययों से अवगत कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1.	महाभाष्य, पस्पशाह्निक - प्रारम्भ से व्याकरण के गौण प्रयोजन पर्यन्त।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2.	महाभाष्य, पस्पशाह्निक - शब्दानुशासन की पद्धति से समाप्तिपर्यन्त।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3.	भाषा विज्ञान- वाक्य की परिभाषा एवं प्रकार, अर्थ परिवर्तन की दिशाएं एवं कारण।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4.	भाषा विज्ञान - भाषा का आकृतिमूलक एव पारिवारिक वर्गीकरण, भारोपीय भाषाओं का परिचय वैदिक एवं लौकिक संस्कृत की तुलना।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- व्याकरण अध्ययन की महत्ता, प्रासङ्गिकता एवं उद्देश्यों से सुपरिचित होंगे।
- भाषाशास्त्रीय चिंतन में प्राचीन भारतीय भाषादार्शनिकों के अवदान के सन्दर्भ में सुविज्ञ होंगे।
- वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत की तुलना करने में समर्थ हो सकेंगे।
- भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण का अवगाहन करने में समर्थ हो सकेंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निक), जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
2. व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निक), आचार्य मधुसूदन प्रसादमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
3. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 2019
4. द्विवेदी पं0 कपिलदेव, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2016
5. व्यास, भोलाशंकर, संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन चौखम्बा विद्याभवन, 1957

अधिन्यास कार्य -

1. भाषाओं के आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण पर प्रकाश डालें।

अथवा

महाभाष्य के पस्पशाह्निक के आधार पर व्याकरण-अध्ययन के प्रयोजन पर प्रकाश डालिए।

परास्नातक (संस्कृत)
द्वितीय सेमेस्टर, चतुर्थ प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 204 अधिकतम अंक 100

काव्य एवं नाट्यशास्त्र

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग से छात्रों को परिचित कराना एवं महाकाव्य की कसौटी पर रघुवंश महाकाव्य का मूल्यांकन करने में समर्थ बनाना।
- छात्रों को भरतमुनिकृत 'नाट्यशास्त्र' के अध्ययन के माध्यम से भारतीय नाट्यविद्या के बहुआयामी स्वरूप से सुपरिचित कराना।
- भरतमुनि की रसविषयक मान्यताओं से अवगत कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	रघुवंशम् (प्रथम सर्ग) - पद्य 1 से 45 तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	रघुवंशम् (प्रथम सर्ग) - पद्य 46 से अन्त तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	नाट्यशास्त्रम् (षष्ठ अध्याय) - कारिका 1 से 40 तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	नाट्यशास्त्रम् (षष्ठ अध्याय) - कारिका 41 से अन्त तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- काव्य के रसास्वादन के लिए अपेक्षित सूक्ष्म भावों से सम्पन्न होंगे।
- महाकाव्य की कसौटी पर रघुवंश महाकाव्य का मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
- ग्रंथ में विवेचित नाट्य एवं काव्य के भावों को हृदयंगम कर आलोचनात्मक मूल्यांकन में सक्षम होंगे।
- भरतमुनि द्वारा उपस्थापित नाट्य एवं काव्य के कतिपय आधारभूत पारिभाषिक पदों से अवगत होंगे।
- 'रस' एवं 'ध्वनि' के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में विशिष्ट एवं गहन ज्ञानसम्पन्न होंगे।
- निर्धारित ग्रन्थ के अवबोध एवं व्याख्या में समर्थ होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. रघुवंश महाकाव्यम् (कालिदासविरचितम्) 'रश्मि' सरलार्थ हिन्दी व्याख्या, डॉ. बलवान सिंह यादव, चौ.सं.भ., वाराणसी, 2018
2. रघुवंश महाकाव्यम् (कालिदासविरचितम्) मल्लिनाथ विरचित 'संजीवनी' सन्दर्भ प्रसंग अन्वय, संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित डॉ. नर्मदेश्वर त्रिपाठी, भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी, 2009।
3. नाट्यशास्त्र (षष्ठ अध्याय), भरतमुनि (सम्पा0) बटुकनाथ शर्मा एवं पं0 बलदेव उपाध्याय, काशी संस्कृत सीरीज, वाराणसी
4. नाट्यशास्त्र (षष्ठ अध्याय), भरतमुनि (व्या0) ब्रजमोहन चतुर्वेदी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।

अधिन्यास कार्य -

1. रघुवंशम् प्रथम सर्ग का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

आचार्य भरत के रससूत्र की व्याख्या कीजिए एवं इस पर विभिन्न आचार्यों के मतों को स्पष्ट कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)

द्वितीय सेमेस्टर, पञ्चम प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 205 अधिकतम अंक 100

- अभिन्यास कार्य।
- परियोजना कार्य।
- उपस्थिति।
- समग्र प्रदर्शन।

परास्नातक (संस्कृत)

तृतीय सेमेस्टर, प्रथम प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 301 अधिकतम अंक 100

काव्यशास्त्र

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- 'काव्यप्रकाश' नामक ग्रंथ के माध्यम से भारतीय अलङ्कारशास्त्रीय विवेचन के विविध आयामों का साक्षात्कार कराना।
- आचार्य, मम्मट के अनुसार काव्य के प्रयोजन, हेतु एवं स्वरूप से अवगत कराना।
- रस, ध्वनि, अलंङ्कार आदि अवधारणाओं के सन्दर्भ में संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	काव्यप्रकाशः - प्रथम उल्लास		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	काव्यप्रकाशः - द्वितीय उल्लास		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	काव्यप्रकाशः - चतुर्थ उल्लास - कारिका 35 तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	काव्यप्रकाशः - नवम एवं दशम उल्लास - अलङ्कार- वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, ससन्देह, रूपक, अपह्नुति, समासोक्ति, व्यतिरेक, विभावना, विशेषोक्ति, विरोधाभास, काव्यलिंग भ्रान्तिमान, संसृष्टि एवं संकर।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- विभिन्न प्रकार के काव्य गुणों, अलङ्कारों आदि काव्य- तत्वों के संदर्भ में मम्मट द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के विशिष्ट ज्ञान से युक्त होंगे।
- ग्रन्थ में वर्णित काव्य के निर्मायक तत्वों को दृष्टिगत करते हुए अन्य साहित्यिक ग्रंथों के आलोचनात्मक मूल्यांकन में सक्षम होंगे।
- प्रकृत ग्रन्थ के विषयवस्तु के समालोचनात्मक विश्लेषण की योग्यता से सम्पन्न होंगे।
- काव्य सौन्दर्य के रसास्वादन के लिए अपेक्षित सूक्ष्मतर भावों से अनुप्राणित होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. काव्यप्रकाश मम्मट, (व्या0) आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 2019
2. काव्यप्रकाश मम्मट, (व्या0) वामनाचार्य भट्ट, परिमल पब्लिकेशंस दिल्ली, 2017
3. काव्यप्रकाश मम्मट, (व्या0) श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ

अधिन्यास कार्य -

1. मम्मट के अनुसार काव्य प्रयोजन एवं काव्य हेतु पर प्रकाश डालिए।

अथवा

चतुर्विध रस सिद्धान्तों को स्पष्ट कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)
तृतीय सेमेस्टर, द्वितीय प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 302 अधिकतम अंक 100

दर्शन - मीमांसा एवं वेदान्त

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- भारतीय दर्शन के दो प्रमुख आस्तिक सम्प्रदायों यथा - मीमांसा एवं वेदान्त दर्शन के महत्वपूर्ण अवधारणाओं का गहन अध्ययन उत्कृष्ट प्राथमिक ग्रन्थों यथा 'अर्थसंग्रह' एवं 'वेदान्तसार' के माध्यम से कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	अर्थसंग्रह - प्रारम्भ से भावना निरूपण पर्यन्त।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	अर्थसंग्रह - वेद से विनियोग विधि तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	वेदान्तसार - प्रारम्भ से अध्यारोप वर्णन तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	वेदान्तसार - अज्ञान से पंचीकरण पर्यन्त।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- अर्थसंग्रह एवं वेदान्तसार के मूल पाठ्यांशों की व्याख्या तथा उसमें सन्निहित दार्शनिक संप्रत्ययों को आत्मसात करने में सक्षम होंगे।
- अद्वैत वेदान्त तथा मीमांसा दर्शनों में अङ्गीकृत पारिभाषिक पदों के भावावबोध में समर्थ होंगे।
- अद्वैत वेदान्त दर्शन द्वारा प्रतिपादित सृष्टिविज्ञान एवं अन्य तत्वमीमांसीय आयाम का साक्षात्कार कर बौद्धिक दृष्टि से उन्नत होंगे।
- मीमांसकों के भाषाशास्त्रीय अवदान से सुपरिचित हो सकेंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर, (व्या0) कामेश्वरनाथ मिश्र, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 1983
2. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर, (व्या0) वाचस्पति उपाध्याय, चौखम्बा ओरियन्टलिया, वाराणसी, 1977
3. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर, (व्या0) राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2019
4. वेदान्तसार, सदानन्द, (व्या0) सन्तनारायण श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी 2019
5. वेदान्तसार, सदानन्द, (व्या0) आचार्य राममूर्ति शर्मा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 2001

अधिन्यास कार्य -

1. शाब्दी एवं आर्थी भावना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

वेदान्तसार के अनुसार अध्यारोप, अपवाद एवं पंचीकरण को स्पष्ट कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)
तृतीय समेस्टर, तृतीय प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 303 अधिकतम अंक 100

महाकाव्य एवं व्याकरण

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- छात्रों को महाकवि श्रीहर्षकृत नैषधीयचरितम् महाकाव्य के अध्ययन-अनुशीलन के माध्यम से संस्कृत महाकाव्य के वर्ण्यविषय एवं स्वरूप के ज्ञान से सम्पन्न बनाना।
- महाकवि श्री हर्ष की पाण्डित्यपूर्ण शैली से सुपरिचित कराना।
- छात्रों को लघु सिद्धान्तकौमुदी ग्रन्थ के अनुसार समास विधायक सूत्रों तथा तत्सम्बन्धी सिद्धि प्रक्रिया के सन्दर्भ में विशेष ज्ञान प्रदान करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	नैषधीयचरितम् - (प्रथम सर्ग) - पद्य 1 से 30 तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	नैषधीयचरितम् - (प्रथम सर्ग) - पद्य 31 से 70 तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	लघुसिद्धान्त कौमुदी - केवल एवं अव्ययीभाव समास		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	लघुसिद्धान्त कौमुदी - तत्पुरुष समास।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- (नैषधीयचरित महाकाव्य में) काव्य के कला पक्ष की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति का साक्षात्कार कर सकेंगे।
- समस्त पदों के निर्माण की प्रक्रिया एवं स्वरूप के सम्बन्ध में प्रवीण/ पारङ्गत होंगे।
- संस्कृत भाषा के समस्त पदों की सिद्धि प्रक्रिया सम्बन्धी सूत्रों की व्याख्या में प्रयुक्त पाणिनीय संज्ञापदों से सुपरिचित होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग), श्रीहर्ष (व्या0) डॉ0 सुरेन्द्रदेव शास्त्री, चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी 2000
2. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग), श्रीहर्ष (व्या0) आचार्य शेषराज रेग्मी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016
3. लघुसिद्धान्त कौमुदी, (आचार्य वरदराज) डॉ. आद्याप्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।

अधिन्यास कार्य -

1. निम्नपदों की सिद्धि कीजिए- भूतपूर्वः, अधिहरि, यथाशक्ति, प्रतिदिनम्, निर्मक्षिकम्।

अथवा

'नैषधविद्वदौषधम्' की व्याख्या कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)
तृतीय समेस्टर, चतुर्थ प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 304 अधिकतम अंक 100

नाट्यविद्या एवं रूपक

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- छात्रों को 'दशरूपक' ग्रन्थ के अध्ययन-अनुशीलन से दृश्यकाव्य के बहुविध स्वरूप के सम्बन्ध में प्रज्ञावान् बनाना।
- भारतीय नाट्य-चिंतन की सुदीर्घ परम्परा से सम्यग्रूपेण अवगत कराना।
- महाकवि शूद्रककृत मृच्छकटिकम् नामक उत्कृष्ट नाट्यकृति का पारायण कराकर उसके अपूर्व काव्यसौन्दर्य की अनुभूति कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	दशरूपक (अवलोकसहित) दशरूपकम् (अवलोक सहित) - प्रथम प्रकाश।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	दशरूपकम् (अवलोक सहित)- तृतीय प्रकाश।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	मृच्छकटिकम् - प्रथम अंक से तृतीय अंक पर्यन्त		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	मृच्छकटिकम् - चतुर्थ अंक से षष्ठ अंक पर्यन्त।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- टीकाकार धनिक की टिप्पणियों एवं व्याख्या के आलोक में निर्धारित ग्रन्थ की व्याख्या एवं आलोचनात्मक विश्लेषण में सामर्थ्यवान होंगे।
- ग्रन्थ में वर्णित नाट्य विधा के विविध पारिभाषिक पदों का भावावबोध कर अन्य नाट्यकृतियों के समालोचन में सक्षम होंगे।
- संस्कृत नाट्यकृतियों के संरचनात्मक स्वरूप से सुपरिचित होंगे।
- मृच्छकटिकम् नाटक के काव्यसौंदर्य तथा उसमें वर्णित तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक झाकियों से साक्षात्कार करेंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. दशरूपकम्, धनञ्जय (धनिककृत अवलोक सहित), व्या0 डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011
2. दशरूपकम्, धनञ्जय सम्पादक - लोकमणि दाहाल, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2008
3. मृच्छकटिकम्, शूद्रक (अनु एवं व्या0) डॉ0 जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2006
4. मृच्छकटिकम्, शूद्रक (व्या0) जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी 2010

अभिन्यास कार्य -

1. दशरूपक के आधार पर रूपक के भेदों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

मृच्छकटिकम् प्रकरण का एक सामाजिक प्रकरण के रूप में मूल्यांकन कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)

तृतीय सेमेस्टर, पञ्चम प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 305 अधिकतम अंक 100

- अधिन्यास कार्य।
- परियोजना कार्य।
- उपस्थिति।
- समग्र प्रदर्शन।

परास्नातक (संस्कृत)
चतुर्थ सेमेस्टर, प्रथम प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 401 अधिकतम अंक 100

काव्यशास्त्र

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- आचार्य आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक ग्रंथ के अध्ययन से नाट्य एवं काव्य के कतिपय आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- आचार्य कुन्तक कृत प्रसिद्ध अलङ्कारशास्त्रीय ग्रंथ 'वक्रोक्तिजीवितम्' के माध्यम से काव्यशास्त्र के प्रसिद्ध सम्प्रदाय 'वक्रोक्ति' के मूलभूत सिद्धांतो से छात्रों का साक्षात्कार कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत) - कारिका 1 से 12 तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत) - कारिका 13 से अन्त तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	वक्रोजीवितम् (प्रथम उन्मेष) - कारिका 1 से 21 तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	वक्रोजीवितम् (प्रथम उन्मेष) - कारिका 22 से अन्त तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- आचार्य आनन्दवर्धन द्वारा उपस्थापित नाट्य एवं काव्य के कतिपय आधारभूत पारिभाषिक पदों से अवगत होंगे।
- 'रस' एवं 'ध्वनि' के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में विशिष्ट एवं गहन ज्ञानसम्पन्न होंगे।
- निर्धारित ग्रन्थद्वय के अवबोध एवं व्याख्या में समर्थ होंगे।
- ग्रंथद्वय में विवेचित नाट्य एवं काव्य के भावों को हृदयंगम कर आलोचनात्मक मूल्यांकन में सक्षम होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत), आनन्दवर्धन, (व्या0) - जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 2014
2. ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत), आनन्दवर्धन, (व्या0) - आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञान मण्डल लिमिटेड वाराणसी
1. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष) - कुन्तक (व्या0) राधेश्याम मिश्र, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2007
2. वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष) - कुन्तक (व्या0) दशरथ द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2015

अधिन्यास कार्य -

1. वक्रोक्तिजीवित के आधार पर षड्विधवक्रता को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ध्वन्यालोक के आधार पर त्रिविध ध्वनियों को स्पष्ट कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)
चतुर्थ सेमेस्टर, द्वितीय प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 402 अधिकतम अंक 100

दर्शन : मीमांसा एवं वेदान्त

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- भारतीय दर्शन के दो प्रमुख आस्तिक सम्प्रदायों यथा - मीमांसा एवं वेदान्त दर्शन के महत्वपूर्ण अवधारणाओं का गहन अध्ययन उत्कृष्ट प्राथमिक ग्रन्थों यथा 'अर्थसंग्रह' एवं 'वेदान्तसार' के माध्यम से कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	अर्थसंग्रह: - प्रयोग विधि से नामधेय तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	अर्थसंग्रह: - निषेध से अन्त तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	वेदान्तसार: - स्थूल प्रपंचोत्पत्ति से महावाक्यार्थ तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	वेदान्तसार: - अवशिष्ट भाग।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- अर्थसंग्रह एवं वेदान्तसार के मूल पाठ्यांशों की व्याख्या तथा उसमें सन्निहित दार्शनिक संप्रत्ययों को आत्मसात करने में सक्षम होंगे।
- अद्वैत वेदान्त तथा मीमांसा दर्शनों में अङ्गीकृत पारिभाषिक पदों के भावावबोध में समर्थ होंगे।
- अद्वैत वेदान्त दर्शन द्वारा प्रतिपादित सृष्टिविज्ञान एवं अन्य तत्वमीमांसीय आयाम का साक्षात्कार कर बौद्धिक दृष्टि से उन्नत होंगे।
- मीमांसकों के भाषाशास्त्रीय अवदान से सुपरिचित हो सकेंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर, (व्या0) कामेश्वरनाथ मिश्र, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 1983
2. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर, (व्या0) वाचस्पति उपाध्याय, चौखम्बा ओरियन्टलिया, वाराणसी, 1977
3. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर, (व्या0) राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2019
4. वेदान्तसार, सदानन्द, (व्या0) सन्तनारायण श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी 2019
5. वेदान्तसार, सदानन्द, (व्या0) आचार्य राममूर्ति शर्मा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 2001

अधिन्यास कार्य -

1. अर्थसंग्रह ग्रन्थ के अनुसार नामधेय एवं निषेध को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

वेदान्तसार के अनुसार निर्विकल्पक समाधि एवं सविकल्पक समाधि को स्पष्ट कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)
चतुर्थ सेमेस्टर, तृतीय प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MSK 403 अधिकतम अंक 100

महाकाव्य एवं व्याकरण

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- छात्रों को महाकवि श्रीहर्षकृत नैषधीयचरितम् महाकाव्य के अध्ययन-अनुशीलन के माध्यम से संस्कृत महाकाव्य के वर्ण्यविषय एवं स्वरूप के ज्ञान से सम्पन्न बनाना।
- महाकवि श्री हर्ष की पाण्डित्यपूर्ण शैली से सुपरिचित कराना।
- छात्रों को लघु सिद्धान्तकौमुदी ग्रन्थ के अनुसार समास विधायक सूत्रों तथा तत्सम्बन्धी सिद्धिप्रक्रिया के सन्दर्भ में विशेष ज्ञान प्रदान करना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे)	शिक्षण विधि
1	नैषधीयचरितम् - (प्रथम सर्ग) - पद्य 71 से 110 तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा
2	नैषधीयचरितम् - (प्रथम सर्ग) - पद्य 111 से अन्त तक		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा
3	लघुसिद्धान्त कौमुदी - बहुव्रीहि समास		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा
4	लघुसिद्धान्त कौमुदी - द्वन्द्व समास।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य / समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- (नैषधीयचरित महाकाव्य में) काव्य के कला पक्ष की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति का साक्षात्कार कर सकेंगे।
- समस्त पदों के निर्माण की प्रक्रिया एवं स्वरूप के सम्बन्ध में प्रवीण/पारङ्गत होंगे।
- संस्कृत भाषा के समस्त पदों की सिद्धि प्रक्रिया सम्बन्धी सूत्रों की व्याख्या में प्रयुक्त पाणिनीय संज्ञापदों से सुपरिचित होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग), श्रीहर्ष (व्या0) डॉ0 सुरेन्द्रदेव शास्त्री, चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी 2000
2. नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग), श्रीहर्ष (व्या0) आचार्य शेषराज रेग्मी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016
4. लघुसिद्धान्त कौमुदी, डॉ. आद्याप्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।

अधिन्यास कार्य -

1. निम्नपदों की सिद्धि कीजिए- नीलकण्ठः, दशाननः, चित्रगुः, हरिहरौ, शिवकेशवौ।

अथवा

'नैषधे पदलालित्यम्' की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए।

परास्नातक (संस्कृत)
चतुर्थ सेमेस्टर, चतुर्थ प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MKS 404 | अधिकतम अंक 100

गद्यकाव्य एवं चम्पूकाव्य

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- संस्कृत वाङ्मय की गद्य विधा के भेदों-प्रभेदों का दिग्दर्शन कराना।
- गद्य विधा के सर्वोत्कृष्ट रचनाकार बाणभट्ट की अतिविशिष्ट कृति से साक्षात्कार कराना तथा उनकी उत्कृष्ट गद्य शैली के अध्ययन-अनुशीलन का अवसर प्रदान करना।
- कवि त्रिविक्रमभट्ट कृत नलचम्पू ग्रंथ के अध्ययन के माध्यम से चम्पू काव्य से परिचित कराना।

इकाई	शीर्षक	व्याख्यान अवधि (60 घण्टे	शिक्षण विधि
1	हर्षचरितम् (पंचम उच्छ्वास)- प्रारम्भ से 'तां निशामनयत्' पर्यन्त)।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
2	हर्षचरितम (पंचम उच्छ्वास)- अपेद्युरुदिते से समाप्तिपर्यन्त।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
3	नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास) - प्रारम्भ से पद्य संख्या 33 तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा
4	नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास) - पद्य संख्या 34 से समाप्ति तक।		व्याख्यान / श्यामपट्ट कार्य/ समूह परिचर्चा

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- महाकवि बाणभट्ट की गद्य शैली विशेषतः उनके समासप्रधान पदरचना से साक्षात्कार कर सकेंगे।
- 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' इस उक्ति की युक्तियुक्तता का महाकवि बाणभट्ट की कृति के संदर्भ में मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
- नलचम्पू के माध्यम से चम्पू काव्य का साक्षात्कार करने में समर्थ होंगे।
- गद्य साहित्य एवं चम्पू साहित्य के कलापक्ष एवं भावपक्ष के आलोचन-अनुशीलन में सामर्थ्यवान् होंगे।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक स्रोत -

1. हर्षचरितम् (पंचमोच्छ्वासः) - बाणभट्ट (व्या0) - श्री शिवनाथ पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।
2. हर्षचरितम् (पंचमोच्छ्वासः) - बाणभट्ट (व्या0) - निरंजन मिश्र, हंस प्रकाशन जयपुर।
3. नलचम्पू- त्रिविक्रमभट्ट (व्या0) श्रीधरानन्द शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन वाराणसी ।
4. नलचम्पू - त्रिविक्रमभट्ट (व्या0) पं0 श्री परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।

अधिन्यास कार्य -

1. हर्षचरितम् के पंचम उच्छ्वास का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

नलचम्पू के प्रथम उच्छ्वास का सारांश अपने शब्दो में लिखिए।

परास्नातक (संस्कृत)

चतुर्थ सेमेस्टर, पञ्चम प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड MKS 205 अधिकतम अंक 100

- अभिन्यास कार्य।
- परियोजना कार्य।
- उपस्थिति।
- समग्र प्रदर्शन।
- मौखिकी परीक्षा।